International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 1; Issue 10; December 2016; Page No. 54-57

रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ0 कल्पना मिश्रा

शोधार्थी (शिक्षा), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

छात्रों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है शिक्षक छात्र के बौद्धिक विकास के अनुकूल उन्हें पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु को व्याख्या करता है क्योंकि कक्षा में अलग–अलग बौद्धिक विकास हेतु और औसत दर्जे के छात्र/छात्राओं को केन्द्र में रखकर ही वे अपने बातों को व्याख्यायित करता है। इसके बावजूद ही उच्च बौद्धिक विकास वाले छात्रों की ओर शिक्षक का उन्मुखीकरण ज्यादा होता है। निम्न मानसिक विकास वाले छात्रों को उत्साहित करने के लिए विभिन्न प्रकार की प्रोत्साहन योजनाएँ शासन स्तर पर बनाई गई है। योजनाएँ निहितार्थ छात्र–छात्राओं के मानसिक रूप से और भावनात्मक रूप से मनोवैज्ञानिक प्रभाव डालने के लिए क्रियान्वित की जाती है, ताकि छात्र–छात्राओं में कुंठा की भावना प्रभावी न हो सके। प्रोत्साहन योजनाओं का महत्वपूर्ण उपयोगिता और सार्थकता औसत दृष्टिकोण से पिछड़े विभिन्न समुदाय के छात्र–छात्राओं को अध्ययन केन्द्र में धारा के विकास की धारा से जोड़ने विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं में जोड़ने के लिए विभिन्न प्रभावी योजनाएँ बनाई गई है, जिनमें सायकल वितरण, गणवेश वितरण आदि है।

प्रस्तुत शोध रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का समीक्षात्मक अध्ययन पर आधारित है। शोध के निष्कर्ष यह बताते है कि शोध क्षेत्र के उत्तरदाताओं का 67.33 प्रतिशत मत है कि शोध क्षेत्र में विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का क्रियान्वयन मध्यप्रदेश शासन के मानक के अनुरूप हो रहा है।

मूल शब्दः रीवा जिला, माध्यमिक स्तर, प्रोत्साहन योजनाएँ, विद्यार्थी, व्यक्तित्व, विकास, समीक्षात्मक, अध्ययन।

1. प्रस्तावना

शिक्षा के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित कर सकता है। शिक्षा से ही व्यक्ति सही रूप में चिंतन करना सीखता है। शिक्षा व्यक्तियों का निर्माण तथा चरित्र को उत्कृष्ठ बनाती है। शिक्षा एक साधन है, जो व्यक्ति के नैतिक, शारीरिक, संवेगात्मक बौद्धिक एवं आंतरिक ज्ञान को बाहर लाने में योग देने वाली एक क्रिया है। इस प्रकार हम कह सकते है कि व्यक्ति के जीवन में शिक्षा ऐसा परिर्वतन लाती है। जिससे वह निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हो सकता है।

आधुनिक भारत का निर्माण करने में जिन विचार को महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनमें स्वामी विवेकानंद महामना पंडित मदन मोहन मालवीय गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी और महर्षि अरविन्द के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इन विचारों से प्रभावित किया। टैगोर जी ने विश्व भारती की स्थापना करके शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन विचार धारा का सुत्रपात किया।

शिक्षा मानव जीवन की आधार शिला है। व्यक्ति को जन्म से ही शिक्षा की आवश्यकता होती है। बालक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन करने के लिए एक व्यवस्थित शिक्षा की परम् आवश्यकता होती है।

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। यदि किसी भी व्यक्ति को जीवन में सफलता प्राप्त करनी है, तो शिक्षा उसके लिए अति आवश्यक है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है।

आज की शिक्षा बालकेन्द्रित शिक्षा है, अर्थात् बालकों को व्यक्तिगत योग्यता, आवश्यकता और क्षमता रूचि के अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। जिससे उनका सर्वांगिण व स्वाभाविक विकास हो सके। बालकों में अपनी–अपनी सामर्थ्य के अनुसार काम करने, समझने की सीमायें होती है, जिससे समायोजित करने में शिक्षा का विशेष महत्व होता है।

शिक्षा व्यक्ति के विचारों को जो कि सांवेगिक एवं बौद्धिक होते है कि पूर्ण अभिव्यक्ति में सहायक होता है, इसके द्वारा बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण, सहानुभूति, स्वआत्मन, स्वप्रबंधन, सामाजिक जागरूकता, तनाव नियंत्रण, आदि करना सीखता है एवं इसके द्वारा उपयुक्त निर्णय लेकर प्रत्येक क्षेत्र में समायोजित होकर अच्छा प्रदर्शन करता है। जिन बालकों अथवा छात्रों में संवेगात्मक स्थिरता का अभाव होता है तथा वातावरण के साथ समायोजन करने में वे कठिनाई का अनुभव करते है। अतः शिक्षा द्वारा छात्रों को सांवेगिक रूप से परिपक्व बनाकर उन्हें वातावरण में उचित समायेजित किया जा सकता है।

व्यक्तित्व के विकास में उपयोगी प्रोत्साहन आवश्यकता का महत्व प्रोत्साहन का अर्थ उत्साहवर्धन होता है व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रोत्साहन से विकसित होने से अहम भूमिका निर्धारित करता है। प्रायः देखा जाता है कि व्यक्तित्व का विकास विभिन्न आयामों में होता है। व्यक्ति स्वभाव से ही चिंतनशील प्राणी होता है वह प्रकृति में घटने वाले सभी आयाम को बड़ी उत्सुकता से देखता है एवं उसके साथ आवश्यकतानुसार सहचर्य स्थापित करना चाहता है। प्रारंभ में जब मनुष्य ने आकाश में हवाई जहाज को देखा होगा तो निश्चित ही उसके मन में कल्पना हुई होगी कि यह क्या है? इस तरह की अनेक बातें जब उसके मन में आर्ठ तो स्वभाविक रूप से उसके आसपास समाज एवं समूह से साझा किया होगा तो उसके प्रति आकर्षित होकर उसक सानिध्य में जाने की उत्सुकता रही होगी। सरकार द्वारा प्रोत्साहित योजनाओं में उसके अनेक समस्याओं का समाधान हुआ। उदाहरण के लिए यदि हम साईकिल वितरण पर विचार करे तो यह समझ में आता है कि यह शासन की ऐसी महत्वाकांक्षी योजना है जो कम समय में ज्यादा दूरी तय करने का एक अच्छा साधन है। इससे छात्र जो विद्यालय नहीं जा सकते थे या विद्यालय पहुंचने में विलम्ब होता था उस समस्या से निजात मिली और छात्रों के व्यक्तित्व के विकास में योजना बहुत ही कारगर और लाभान्वित हुई।

निःशुल्क पाठ्य–पुस्तक वितरण योजना
वर्तमान में निःशुल्क पुस्तकों का वितरण से सभी छात्रों को निःशुल्क पाठ्य–पुस्तके वितरित की जाती है, जिससे छात्रों को इस समस्या से निजात मिली है। छात्र पूरा कोर्स पढ़ पाते है तथा उनके व्यक्तित्व में उत्तरोत्तर वृद्धि होती है।

छात्रवृत्ति योजना
भारत एक विकासशील देश है। हमने अपने विकास का एक अध्याय पूरा किया तथा गरीबी से आज विकासशील देखों की श्रेणी में आ गया है। आज से 30–40 वर्ष पहले बहुत से छात्र मात्र इसलिए वार्षिक परीक्षा में नहीं बैठ पाते थे कि उनके पास फीस के लिए पैसे नहीं होते थे। वर्तमान में कोई भी छात्र शुल्क अदा न करने के कारण परीक्षाओं में न बैठ पाया हो यह देखने को नहीं मिलता है। जिसके वजह से यह परीक्षा में बैठकर अच्छें अंकों से उत्तीर्ण होते है एवं उनके व्यक्तित्व का विकास अवरोध गति से होता रहता है।

गणवेश योजना
गणवेश वितरण का कार्यक्रम शासकीय शालाओं में कक्षा 1 से 8 तक किया जाता है। पहले यह विद्यालय द्वारा यह छात्रों को उपलब्ध कराया जाता था, परन्तु इसमें अनियमितता की अनेक शिकायतें आने के बाद शासन ने अभिभावकों को एकाउण्ट पेयी चेक द्वारा सीधे छात्र/ छात्राओं के एकाउण्ट में जमा करा दिया जाता है। इसमें अनियमितता की स्थिति कम देखने को मिलती है। विद्यालय द्वारा 15 जुलाई तक आवश्यक रूप से उनके खाते में अनिवार्य रूप में जमा हो जाता है।

सायकल वितरण योजना
सायकल वितरण योजना के अन्तर्गत ऐसी छात्राओं को जो दूसरे गाँवों में पढ़ने जाती है निःशुल्क सायकल वितरण की व्यवस्था है। परन्तु शर्त यह है कि छात्रा को दूसरे गाँव में पढ़ने पर तभी सायकल प्रदान की जाती है जब उसके गाँव में जिस कक्षा में वह पढ़ने जाती है उसके गाँव के विद्यालय में वह शिक्षा संचालित नहीं जो जहाँ पढ़ने जा रही है वहाँ संचालित हो।

2. अध्ययन की आवश्यकता
प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर पर विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। माध्यमिक शाला में पहुंचने के साथ ही बालक को विषय आधारित शिक्षा का प्रारंभ कराया जाता है, जिसका आधार व्यावहारिक ज्ञान और मस्तिष्क को चिंतन के लिए विकसित करना है। इस तरह व्यक्तित्व के विकास की प्रभावी भूमिका की शुरूआत माध्यमिक शाला से होती है। वर्तमान में शाला स्तर पर प्रोत्साहन योजनाओं के कार्य निष्पादन पर शिक्षकगणों के दृष्टिकोण को समझने के लिए इस अध्ययन की आवश्यकता को महसूस किया गया ताकि प्रोत्साहन योजनाओं से वांछित परिणाम प्राप्त हो सकें।

3. परिकल्पना
शोध क्षेत्र में विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का क्रियान्वयन मध्यप्रदेश शासन के मानक के अनुरूप हो रहा है।

4. उद्देश्य
- परिवार, समाज और विद्यालय के मध्य बालकों द्वारा सामंजस्य बनाने की पहल हेतु शिक्षकों का मार्गदर्शन।
- शिक्षकों के व्यक्तित्व विकास हेतु सरकारी योजनाओं का अध्ययन।
- शारीरिक, मानसिक विकास के लिये शिक्षकों द्वारा किये गये प्रयासों का अध्ययन।

5. शोध समस्या का सीमांकन
प्रस्तुत अध्ययन रीवा जिले के 09 विकासखंडों में से 6 विकासखण्डों का चयन कर चयनित विकासखण्डो में से उनके अन्तर्गत आने वाले प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय में से 3 शिक्षक, 1 अभिभावक एवं 1 छात्र अर्थात प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय से 5 उत्तरदाताओं का चयन कर प्रत्येक विकासखण्ड से 50 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। इस प्रकार 6 विकासखण्ड से 300 उत्तरदाताओं का जिले से चयन किया गया है। शोध अध्ययन हेतु उत्तरदाताओं का इस प्रकार से चयन किया गया है कि जिले के सभी विकासखण्डों के माध्यमिक विद्यालय अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सकें तथा इनमें शहरी और ग्रामीण अनुपात भी यथानुसार रखा गया है।

6. अध्ययन विधि
प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है–
- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधि :** शैक्षिक अनुसंधान में साक्षात्कार विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया जाता है। इस विधि के द्वारा गुणात्मक एवं संख्यात्मक दोनो प्रकार की जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। इस अनुसंधान में भी शोधार्थी ने साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., Chisquare test, 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।
- **प्रश्नावली निर्माण :** प्रश्नावली का सामाजिक अनुसंधान में विस्तृत एवं व्यापक क्षेत्र में फैले हुए सूचनादाताओं से आंकड़े संकलन करने में महत्वपूर्ण स्थान है। यह आंकड़े संकलन करने की एक ऐसी प्रविधि है, जिसमें कम समय में अनेक सूचनादाताओं जो कि विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए होते हैं, से सूचना एकत्रित की जा सकती है। प्रश्नावली प्रश्नों की सूची होती है जिनका उत्तर स्वयं सूचनादाता भरता है। अतः इसका प्रयोग उन्हीं परिस्थितियों में किया जा सकता है जिसमें सूचनादाता शिक्षित हो।

7. शोध उपकरण
शोधार्थी ने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के कार्यक्रमों के संचालन से व्यक्तित्व विकास के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं से जानकारी प्राप्त करने हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा
पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से आर्येन्दु, आहुजा (2001)[1], अग्रवाल, रीना (2007)[2], चौबे, एस.पी. (2003)[3], झा, शीतला एवं दुबे शैलजा (2016)[4], सिंह, शिव प्रकाश (2007)[5] एवं पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[6], पाठक, पी.

डी. (2007)[7] ने शोध विधि एवं विज्ञान विषय से सम्बन्धित कार्य किये है, जिनमें से निष्कर्ष निम्नानुसार है– शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया की अनेक महत्वपूर्ण बातें शिक्षार्थी जीवन में इस प्रक्रिया की उपयोगिता सिद्ध करती हैं। विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के साथ शिक्षक की विद्यार्थी के व्यवहार और सीखने के अनुभव के साथ समग्र विकास में किस तरह भूमिका होती है – इसकी संक्षिप्त जानकारी यह भाग देती है।

9. शोध क्षेत्र का परिचय

मध्यप्रदेश का रीवा जिला 24°18′ से 25° उत्तरी अक्षांश तथा 81°12′ से 82°8′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जिले का क्षेत्रफल 6314 वर्ग किलोमीटर है। रीवा जिला समुद्र से 380 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। रीवा जिले के उत्तर में उत्तरप्रदेश के बांदा एवं इलाहाबाद जिले, पूर्व में उत्तरप्रदेश का मिर्जापुर जिला, दक्षिण में मध्यप्रदेश का सीधी जिला तथा पश्चिम में मध्यप्रदेश का सतना जिला स्थित है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, जो निम्नानुसार है–

सारणी 1: शोध क्षेत्र में विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के क्रियान्यन का अध्ययन।

क्र.	विकासखण्ड	न्यादर्ष में चयनित उत्तरदाताओं की संख्या	विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का क्रियान्यन					
			मानक के अनुसार हो रहा है		मानक के अनुसार नही हो रहा है		पता नही	
			संख्या	प्रतिषत	संख्या	प्रतिषत	संख्या	प्रतिषत
1.	रीवा	50	42	84.00	6	12.00	2	4.00
2.	गंगेव	50	35	70.00	7	14.00	8	16.00
3.	सिरमौर	50	32	64.00	14	28.00	4	8.00
4.	त्योंथर	50	30	60.00	10	20.00	10	20.00
5.	मऊगंज	50	35	70.00	7	14.00	8	16.00
6.	हनुमना	50	28	56.00	12	24.00	10	20.00
योग		300	202	67.33	56	18.67	42	14.00

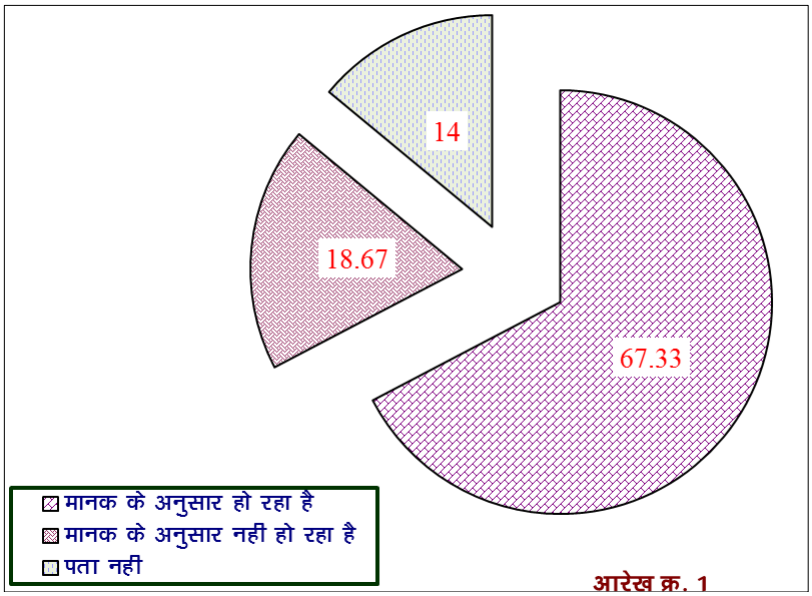

आकृति 1: शोध क्षेत्र में विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के क्रियान्यन का अध्ययन

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित उत्तरदाताओं से प्रश्नावली पत्रक के माध्यम से शोध क्षेत्र में विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के क्रियान्वयन से संबंधित तथ्यों का संकलन किया गया है। शोध क्षेत्र में चयनित 300 उत्तरदाताओं में से 67.33 प्रतिशत मत है कि शोध क्षेत्र में विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का क्रियान्वयन मध्यप्रदेश शासन के मानक के अनुरूप हो रहा है। इसी प्रकार 18.67 प्रतिशत का मत है कि विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का क्रियान्वयन मध्यप्रदेश शासन के मानक के अनुरूप नही हो रहा है, जबकि 14.00 प्रतिशत मत है कि इस संबंध में पता नही है।

तालिका सांख्यिकीय विश्लेषण कई वर्ग की गणना

आवृत्ति	विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का क्रियान्यन		
	मानक के अनुसार हो रहा है	मानक के अनुसार नही हो रहा है	पता नही
F_o	202	56	42
F_e	100.00	100.00	100.00

F_o-F_e	102.00	-44.00	-58.00
$(F_o-F_e)^2$	10404.00	1936.00	3364.00
$\frac{(F_0 - F_e)^2}{F_e}$	104.04	19.36	33.64

$$x^2 = \sum \frac{(F_0 - F_e)^2}{F_e}$$

$x^2 = 157.04$

विश्लेषण एवं व्याख्या

शोध क्षेत्र में विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का क्रियान्वयन मध्यप्रदेश शासन के मानक के अनुरूप की स्थिति ज्ञात करने के लिए प्राप्त आंकड़ों को काई वर्ग द्वारा विश्लेषित किया गया। गणना द्वारा x^2 का मान 157.04 है, जबकि तालिकामान 1df पर तथा 0.05 व 0.01 level पर 3.84 व 6.63 है। गणना मान अधिक होने के कारण सार्थक है कि शोध क्षेत्र में विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का क्रियान्वयन मध्यप्रदेश शासन के मानक के अनुरूप हो रहा है। अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

वास्तव में अनुसंधान एक प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान किया जाता है। मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रदेश में शैक्षणिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया निश्चित ही हय सराहनीय रहा, और उपेक्षित लोगों में शिक्षा प्राप्त करने की प्रेरणा जगी और शिक्षा प्राप्त कर अपने व्यक्तित्व के विकास में वे अग्रणी है। इन योजनाओं का समुचित लाभ लोगों को मिल रहा है।

सुझाव

- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर विद्यालयों को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास हेतु प्रोत्साहन योजनाओं के संचालन में सामाजिक एवं आर्थिक विपन्नताओं को महत्व दिया जाए।
- माध्यमिक स्तर के छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए दैनिक व साप्ताहिक गतिविधिों के अतिरिक्त भी अन्य गतिविधियाँ करवाई जाए।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. आहुजा, राम – सोशल प्रोब्लम्स इन इंडिया, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2001।
2. अग्रवाल, रीना – परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति : एक अवलोकन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2007, वर्ष 26, अंक 21।
3. चौबे, एस.पी. – हिस्ट्री ऑफ इंडियन एजुकेशन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, 2003।
4- झा, शीतला एवं दुबे शैलजा – मध्याह्न भोजन कार्यक्रम व स्व सहायता समूह के कार्य निष्पादन पर शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन, Research Expo International Multidisciplinary Research Journal, 2 016; 4(1):59-64.
5. सिंह, शिव प्रकाश – भारत में 'सभी के लिये शिक्षा' अभियानः मिथक या वास्तविकता, प्रतियोगिता दर्पण, मासिक पत्रिका प्रकाशक एवं मुद्रक महेन्द्र जैन, 2007; आगरा, पृ0 1878–1879।
6. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार – भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार : दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7–9।
7. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2007।